स्पष्ट आवाज़

Lucknow/ December 21, 2012

हरित भवनों को वरीयता देगा एलडीए

निर्माण क्षेत्र शहरों को निवास के लिये अयोग्य बना सकते है

लखनऊ। हवा ,पानी, बिजली और जलवायु का जिस तरह से दोहन मानवों द्वारा अपने स्वार्थ के लिये किया जा रहा, कुछ समय बाद शहरों के यही निर्माण लोगो को निवास के लिये अयोग्य बना सकते है? इस समस्या के बारे में हम सभी को सोचना चाहिए नहीं तो कुछ लोगो की गलतियों का खमियाजा हमें अपने स्वास्थ्य से समझौता कर चुकाना पडेगा। लखनऊ सहित सभी शहरों में प्राकृति द्वारा प्रदत्त संसाधनों का जिस गति से दोहन हो रहा है उससे वह समय दूर नहीं की प्राकृति के संसाधन जल्द ही समाप्त हो जायेगे। ऐसी स्थिति से बचने के लिये लखनऊ विकास प्राधिकरण अपने द्वारा बनाये जा रहे भवनों काम्प्लेक्स और फ्लैटों में हरित भवनों को वरीयता दे रहा है। यह जानकारी यहां एक निजी होटल में आयोजित कार्यशाला में आये लोगो को जानकारी देते हुए सेन्टर फार साइंस एडं इन्वायान्मेंट की डिप्टी प्रोग्राम मैनेजर साक्षी सी•दास गुप्ता ने दी। उन्होने बताया कि अब एलडीए सहित उन सभी कंस्ट्रक्शन कम्पनियों के साथ मिलकर हमारी संस्था इसे मुद्दों पर काम करेगी जिससे प्राकृतिक संसाधनों का कम से कम दोहन किया जा सके। भवनों को ऐसी दिशा में बनाया जाये ताकि रोशनी आने का पूरा स्थान हर कमरे में हो ताकि कमरों में उजाला लाने के लिये लाइटों का कम से कम प्रयोग कर बिजली को बचाया जा सके। उन्होने बताया कि बहुमंजिला बिल्डिंग और होटलों की छतों पर सोलर सिस्टमों को रखा जाये ताकि कम से कम बिजली का प्रयोग किया जाये।

कार्यक्रम कन्वेनर अनुमिता राय चौधरी ने बताया कि आज भवनों का जिस तरह से निर्माण हो रहा जल्द ही पानी, बिजली और खाद्यान के लिये लड़ाइयां होने लगेगी। इस स्थिति से बचने के लिये जरुरी है कि सभी लोग इन संसाधानों को इस्तेमाल किफायत से करें। जहां पर आप बल्ब जला रहे वहां सीएफल का प्रयोग कर बिजली बचाये और वर्षा के पानी के संचयन की सभी जगहों पर पूरी व्यवस्था होनी चाहिए। वातावरण को बचाने के लिये वृक्षों की कटान रोकी जाये और अगर वृक्षों को काटना भी पड़े तो दूसरी जगह वृक्षों को लगाया भी जाये ताकि पृथ्वी का संतुलन बना रहे। उन्होने बताया कि अधिक बिजली जलाने से कमरे का वातावरण भी अधिक हो जाता है। घर और आफिस में वेंटिलेशन का पूरा ध्यान रखकर ही भवनों आदि का निर्माण कराकर भविष्य में होने वाली समस्या से बचा जा सकता है।

इस कार्यशाला में बताया गया कि आगामी दशकों में भवन निर्माण क्षेत्र में तेजी की संभावना है,दोनों आवासीय और वाणिज्यक भवनों में कई गुना वृद्धि होगी। इकसा शहरों में स्थान, पानी, ऊर्जा, और संसाधन तथा कचरा उत्पन्न करने की गुणवत्ता पर भारी प्रभाव पडेगा। जब तक स्थान, वास्तुशिल्पीय डिजाइन का चयन, निर्माण सामग्री का समुचित विकल्प, परिचालनात्मक प्रबंधन और मजबूती निगरानी के लिये सही सिद्धांतों के साथ निर्देशित न करें। निर्माण क्षेत्र शहरों को निवास के लिये अयोग्य बना सकता है। उत्तर प्रदेश और दिल्ली के शहर भारत के उत्तर में उच्च विकास के क्षेत्रों में से एक है। फलस्वरुप पर्यावरण पर पड़ने वाले प्रभाव को नियंत्रित करने के लिये मजबूत तकनीकी और प्रशासनिक तैयारी की जरुरत है। यह कार्यशाला नई दिल्ली स्थित अनुसंधान और समर्थन निकाय सेंटर फॉर साइन्स एंड एन्वायरन्मेन्ट द्वारा लखनऊ विकास प्राधिकरण के सहयोग से आयोजित की गयी, जो निर्माण क्षेत्र में ऊर्जा की चुनौतियों पर केन्द्रित है। इस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि हाजी परवेज को आना था किन्तु व किन्हीं कारणों से नहीं आ सके। कार्यक्रम में इक्सकियूटिभ डाइरेक्टर अनुमिता राव चौधरी, एडवोकेट उपेन्द्र वीर सिंह, शैलेन्द्र द्विवेदी, आरडी सिं आदि ने हरित भवनों के बारे में अपने सुझाव कार्यशाला में रखे।